Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 4, Issue - 11, Nov - 2021
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 5.146
Received on : 15/11/2021 Accepted on : 29/11/2021 Publication Date: 30/11/2021

देवदासी बनी भोगदासी : स्त्री का धार्मिक एवं शारीरिक शोषण 'आज बाज़ार बंद है' के विशेष संदर्भ में

दिलना के.
केरल
Email - dilnakravi94@gmail.com

सारांश: समाज द्वारा हमेशा स्त्रियों पर अत्याचार होता गया । समाज स्त्रियों को हमेशा एक चीज़ की तरह इस्तेमाल किया । दलित जाति की स्त्रियों को हमेशा दोहरा अभिशाप झेलना पड़ा । देवदासी प्रथाओं की आड़ में स्त्री का शारीरिक एवं सामाजिक शोषण सामंतों द्वारा हुआ । 'आज बाज़ार बंद है' उपन्यास में इस सामाजिक यथार्थ का पर्दाफाश मोहनदास नैमिशराय द्वारा किया गया । इस उपन्यास में धर्म के नाम पर होनेवाले अधर्म एवं घिनौने कामों को हमारे सामने रखा है। धर्म के ठेकेदारों ने ने सुन्दर कन्याओं को देवदासी बनाकर उन्हें भोगते रहे। जब बाद में उनका तन-मन भरा तो उन्हें वेश्यावृत्ति की और धकेल दिया जाता है । उसका चित्रण इस उपन्यास में विद्यमान है ।

कुंजी शब्द : देवदासी, दलित साहित्य, आज बाज़ार बंद है, उपन्यास , सामाजिक शोषण, वेश्या जीवन, जाति व्यवस्था, स्त्री आदि ।

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में धर्म का विशेष महत्व है । धर्म व्यक्ति को संगठित व एकजुटता स्थापित करने का कार्य करता है। ताकि आपसी सौहार्द बढे । समाज में प्रेम भावना का उद्गार हो सके। लोगों में समतुल्यता का वास हो सभी एक दूसरे का सम्मान करें, चाहे वह पुरुष अथवा स्त्री हो। धर्म समाज में लोगों को जोड़ने का काम करता है। समाज कई जातियों में विभाजित है। हर जाती स्वयं को दूसरी जाती से श्रेष्ठ समझती है। लोग धर्म व जाती के नाम पर एक- दूसरे से लड़ते वक्त यह भूल जाते हैं कि सभी जातियों का एक धर्म है -मानवीयता। धर्म व जातिव्यवस्था के कारण सबसे ज्यादा दुःख-दर्द दलित समुदाय विशेष रूप से दलित युवतियों को सहन करना पड़ा है। कोई भी दलित युवती को शादी की पहली रात पति के साथ नहीं ज़मींदारों के साथ बितानी पड़ती थी। मंदिर में भी दलित लोगों को प्रवेश निषेध था। लेकिन मंदिर में एक दलित लड़की को देवदासी बनाने में कोई निषेध नहीं था।

धर्म व्यवस्था में स्त्री और पुरुष दोनों का अपना - अपना महत्त्व है। लेकिन धर्म को कुछ लोगों ने सीमित बना रखा है। धर्म के ठेकेदारों ने धर्म को विकृत कर दिया है। हिन्दू धर्म ने दलितों को अलग मानकर उन्हें समय- समय पर अपमानित करता रहा, उनका शोषण करता रहा। हर समय वे धर्म के शिकार होते रहे। धार्मिक परिवेश ने अनेक धार्मिक समस्याओं को जन्म दिया है। आज धर्म के नाम से मंदिरों को दूकान बनाया जा रहा है। वहाँ सब कुछ बेचा जा रहा है ,यहाँ तक स्त्री देह भी।**"जातीयता की जड़ें धर्म में भी दिखाई देती हैं। हिन्दू धर्मशास्त्र ने 'दलित मनुष्य' के 'स्पर्श छाया और वाणी' को अस्पृश माना है। अस्पृश्य के स्पर्शों से 'अन्न,पानी और मनुष्य' अपवित्र होते हैं। मनुष्य ही नहीं दलितों के स्पर्श से ईश्वर भी अपवित्र होते थे।"**[1]

इन सब नियमों को ईश्वर ने नहीं बनाया। ये सब ब्राह्मण व सवर्ण जाति के लोगों द्वारा बनाया गया। धर्म मनुष्य का विकास करता है। लेकिन गलत रूढ़ी, परंपरा आदि के कारण मनुष्य गर्त में प्रवेश करने लगा है। उपन्यास की नायिका 'पार्वती' धार्मिक शोषण की शिकार है। मंदिरों की देवदासी प्रथा किस तरह एक गलत व्यवस्था बन गया पार्वती उसके लिए एक सशक्त उदाहरण है। सदियों से उत्पीड़न को भोग रही दलित नारी सवर्ण लोगों के लिए सिर्फ एक वस्तु है ,उनकी भोग्यवस्तु। हमारे धर्मशास्त्र ने भी स्त्री को दासता की बेड़ियाँ पहनाने में कोई कसर नहीं छोड़ा। स्त्री को अस्पृश मानते हुए भी सामने से वे लोग उसका शारीरिक उपयोग संपत्ति तथा सेक्स के रू में करते रहे। मोहनदास जी के अनुसार - **" अधिकाँश दलित महिलाएं दासियां और रखैलों की स्थिति में थी। हिंदी क्षेत्र के अन्य राज्यों में दलित महिलाओं को विवाह की पहली रात किसी नवाब, ज़मींदार, पटेल के साथ गुजरने के लिए विवश होना पड़ता था। "**[2]

पिछले एक दशक से दलित साहित्य आन्दोलन नई दिशाओं की ओर अग्रसर हुआ है। दलित साहीत्य को साहित्य के रूप में स्थान प्राप्त करने के लिए कई संघर्ष करने पड़ें। दलित रचनाकारों ने दलित नारी की एक सच्ची तस्वीर अपनी रचनाओं में उतारी है। समाज में नारी पहले से ही उपेक्षित थी। वर्तमान समाज में उसकी हालत और दयनीय हो गई। उसे केवल उपभोग की वस्तु के रूप में ही देखा जाता रहा है। पुरुष की शारीरिक भूख मिटाने के लिए भारतीय समाज ने वेश्यावृत्ति को जायज़ माना। मंदिरों में देवदासी प्रथा के आड़ में दलित कन्याओं को सवर्ण लोग भोगते रहे। देवदासियों से लेकर वेश्याओं तक की मार्मिक कथा को दलित रचनाकार मोहनदास नैमिशराय अपने उपन्यास **'आज बाज़ार बंद है'** में प्रस्तुत किया है। उन्होंने वेश्याओं की समस्याओं को दिखाकर उन्हें मुक्ति केलिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी। उपन्यास के पात्रों के माध्यम से उन्होंने समाज की सच्चाई से भी परिचित करवाया। देह व्यापार में फंसी हुई राष्ट्र की बेटियों की पीड़ा और वेदना को पाठकों तक पहूँचाया है।

सवर्ण दलित स्त्री को एक पशु के रूप में देखते हैं। मंदिर में देवदासी के रूप में उसे प्रतिष्ठित कर उसे भोगते रहे हैं। पार्वती को दोहरी अभिशाप झेलनी पड़ी। एक तो दलित होने की, दूसरा उसमें स्त्री होने की। दलित स्त्री को ज़बरदस्ती मंदिर में देवदासी बनायी गई। और उसके चढ़ावे में जो कुछ आते थे, उस पर उन लोगों ने अपना हक़ जमाया। बाद में उसके शरीर पर भी। **डॉ.शिल्पी गुप्ता** के शब्दों में **" पार्वती को तो उसके माता -पिता धार्मिक अंधविश्वास के चलते मंदिर में दान कर देते हैं और यहाँ से शुरू होता है देवदासी बनाने की प्रक्रिया। प्रायः छोटी - छोटी जातियों (आर्थिक रूप से कमज़ोर) की लड़कियों को तथा उनके परिवारवालों को कुछ लालच देकर देवदासी बनाकर शोषण किया जाता था, उसी की शिकार पार्वती भी हो जाती है।"**[3]

पार्वती को पहले देवालय में शिव को समर्पित किया, वहाँ उसे सवर्ण, पुजारी,सभी उसे भोगते रहें, और जब उनका तन -मन भर जाता है तो उन्हें चकले भेज देते हैं। उपन्यास में प्रदर्शित वेश्यावृत्ति देवदासी प्रथा को उजागर करता है। देवदासी प्रथा किसी भगवान् ने स्थापित नहीं किया। धर्म की आड़ में कुछ और लोगों ने इसे बनाया। **" देवदासी को कोई भी रखे देवता कुपित नहीं होते थे। पर दलित समाज की कोई लड़की देवदासी न बने तब वे नाराज़ हो जाते थे। देवदासी को विवाह करने की मनाही थी। पर देवदासी के साथ दस-दस लोग सम्भोग करे, न पत्थर के देवताओं को एतराज़ था न शंकराचार्य को। "**[4]

इस व्यवस्था के विरोध में कोई भी कदम नहीं रखा। दलित लोगों में इसे नकारने की शक्ति नहीं थी। सवर्ण लोग द्वारा स्थापित की गयी समाज में अगर अवर्ण की आवाज़ गूंजे तो उस आवाज़ की मालिक ज़िन्दा नहीं बचेगा था। पार्वती बिना शिव की। शिव की उस दासी को भोगने की मौका किसी ने नहीं छोड़ा। मंदिर के पूजारी से लेकर गाँव के पटेल तक ने बाज़ी मारी। हिन्दू समाज ने स्त्रियों को धर्म के साथ जोड़कर उनका उपभोग किया गया। धर्म की आड़ में, देवदासी प्रथा के नाम पर व्यभिचार ही चल रहा था। समाज में जातीय आधार पर महिलाओं का शोषण होता रहा है। दलित वर्ग की महिलाएँ पीढ़ी दर पीढ़ी शोषित होती रही है। देवदासी बनकर मंदिरों में अय्याशी का साधन बन जाती है। पार्वती अपने साथ हुए अन्याय को इस प्रकार व्यक्त करती है - **"वह पुरुष खास जाती के दबदबे वाले पुरुष थे। सामंत और पटेल अधिक रहते थे। कभी-कभी एक ही रात में अनगिनत पुरुष हो जाते थे।"**[5]

पार्वती के दर्दभरे शब्दों से स्पष्ट होता है कि देवदासी को किसने भोग्दासी बनायी। और सवर्ण लोगों द्वारा उसे किस हद तक यौन उत्पीड़न सहना पड़ा। एक ही रात में अनेक पुरुषों ने देवदासी का भोग करने के लिए आते थे। वह भी सवर्ण लोग। उस दलित महिला के शरीर को छूते वक्त उनकी धर्मनीति, छुआछूत आदि कहाँ गए ? क्या यह सब दिन की उजाले में ही चलता है ? रात के अंधेरों में देवदासी को बिस्तर बनाते वक्त उनका धर्म भ्रष्ट क्यों नहीं हो जाता है? इन सब समस्याओं को नैमिशराय पाढकों के सामने रखते हैं। धर्म ने मनुष्यों के लिए अनेक त्योहार और उत्सव शुरू किए। वेश्याओं के लिए भी धर्म ने त्योहार बनाए। अधिकाँश वेश्याओं के नज़ीब में यह उत्सव होते हैं। वेश्याओं के उत्सव और उनकी मान्यताओं का भी उपन्यासकार ने सजीव चित्रण किया है। **" बम्बई से उत्तरी भारत के एक शहर में वह लायी गई तो उत्सव धमिता से धीरे -धीरे जुड़ने लगी। दक्षिण भारतीय होने के नाते वह लायी गई तो उत्सव होते थे। उन उत्सवों पर अभी भी मातृसत्तात्मक समाज का प्रभाव था।"**[6]

वेश्याओं के नाम पर बहुत कम उत्सव मनाया जाता है। इसलिए सभी वेश्याएं उस त्योहार में भाग लेने का एक भी मौका नहीं छोड़ती थी। अधिकाँश वेश्याओं ने पूरे दिल से उस उत्सव में भाग लेती थीं। उस त्योहार की विशेषताओं के बारे में लेखक लिखते हैं- **"जहां योनी पूजा होती थी। वर्षाऋतु के आगमन पर वेश्याएं अपने-अपने आँगन में आग जलाती और गीत गाते हुएअपने नीचे के कपडे को उठाकर अपनी-अपनी योनियों को आग में तापथी थी। इसके पीछे मान्यता थी कि वे योनी को पवित्र करती है।"**[7]

दक्षिण भारत में लिंग पूजा का चलन नहीं था। अधिकाँश औरतें योनिपूजा करती थीं।उपन्यास की नायिका पार्वती स्वयं गर्मियों के बाद इस अनुष्ठान करती थी। धीरे - धीरे मुमताज और साधना भी पार्वती के साथ यह अनुष्ठान करने लगी थी। उससे उन्हें एक अजीब तरह की तृप्ति और रोमांच भी होता था। गीत गाते-गाते वे लोग आग के साथ आग का रिश्ता बनाती। अपने नाम पर होनेवाले त्योहार में वे लोग तन-मन लगा देती थीं। लेकिन कई बाहरवाले इस त्योहार को घृणा से देखते थे। ये वे लोग है जो इन वेश्याओं को अन्य त्योहारों से दूर रखा करती थीं। पर इस उत्सव से वेश्याओं को अजीब तरह की तृप्ति होती थी। लेकिन यह सुख क्षणिक था।

आज लोग धर्म के नाम पर एक-दूसरे के क़त्ल करने पर तुले हुए हैं। लेकिन उपन्यास की दूसरी नायिका शबनम बाई धर्म पर पूरा आस्था नहीं रखती। उनके लिए सब धर्म बराबर है। फिर भी मरने के बाद वह देह-संस्कार की इच्छा प्रकट करती है। **"औरत किसी भी जाती,धर्म की हो या वेश्या ही क्यों न हो परन्तु उन पर धर्म इस कदर आरूढ़ ओ गया है कि वे अपना वर्तमान छोड़कर पुनर्जन्म सुधारने के लिए संस्कार पर आस्था प्रकट करती है। वास्तव में औरत वेश्या क्यों न हो परन्तु उनका संस्कार कभी नहीं मरता।"**[8]

शबनम बाईआगे कहती है- **"में हिन्दू है, पर अपने आपको हिन्दू नहीं मानती मैं मुसलमान बना दी गई। मैं यानी शबनम बाई, पर मुसलमान होते हुए भी अपने को हिन्दू मानती हूँ।"**[9] वह अब प्यार करने की सज़ा भोग रही है। शबनम बाई एम।ए। तक पढ़ी-लिखी औरत है।प्यार के चक्कर में पड़कर अपनी पूरी जिंदगी वेश्यालय में बितानी पड़ी। वह अपनी हालत इस प्रकार बयान करती है, **"एक बेवफा मुसलमान से मोहब्बत कर न सिर्फ अपने इतिहास से कट कर रह गई बल्कि भूगोल से अलग-थलग हो गई"**[10]

जब धर्म ने सत्ता को हथियाने की कोशिश की है तब से देश भर में दलित-आदिवासी-अल्पसंख्यक महिलाओं पर हिंसा का कहर टूट पड़ा। धर्म के लिए अपनी ज़िन्दगी का कुर्बान कर कई लड़कियों ने देवदासी बनीं, पर बदले में उन्हें क्या मिला? धोखा, समाज की घृणा, अंत में एक नाम भी-'वेश्या'। पार्वती ने सुमित की प्रेरणा से वेश्यावृत्ति छोड़ दिया। पर 'वेश्या' नाम एक श्राप बनकर उस पर हमेशा मंडराता रहा। जहां तक नीतिन्याय व्यवस्था भी उस निशाँ को मिटाने में सक्षम नहीं हैं। **कृष्णदत्त पालीवाल** का कहना है कि**,"धर्म से जुड़े सभी पवित्र प्रतीक इस कदर 'घिनौने' हो गए हैं कि हृदय में पीड़ा होती है। राजनीती का 'त्रिशूल' छाती से चुबता है तो धर्मवाद याद आता है।"**[11]

मोहनदास नैमिशराय जी ने इस उपन्यास में धर्म के नाम पर होनेवाले अधर्म एवं घिनौने कामों को हमारे सामने रखा है। 'पार्वती' के माध्यम से धर्म के नाम पर दलित महिलाओं परहोनेवाले अत्याचारों का चित्रण किया है। धर्म के ठेकेदारों ने ने सुन्दर कन्याओं को देवदासी बनाकर उन्हें भोगते रहे। जब बाद में उनका तन-मन भरा तो उन्हें वेश्यावृत्ति की और धकेल दिया। इन सबका चित्रण नैमिशराय जी ने किया है।

सन्दर्भ सूची:

1. मोहनदास नैमिशराय के उपन्यासों में विद्रोह, प्रो.विधाते विकास कुंडलिक, ए.बी.एस. पब्लिकेशन, वाराणसी, 2013, पृ.139
2. दलित उत्पीड़न की परंपरा एवं वर्तमान, मोहनदास नैमिशराय, पृ. 45
3. दलित साहित्य और स्थिति, सं. जयप्रकाश कर्दम, वार्षिकी, 2014, पृ. 432
4. आज बाज़ार बंद है, मोहनदास नैमिशराय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004, पृ.60
5. आज बाज़ार बंद है, मोहनदास नैमिशराय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004, पृ. 60
6. आज बाज़ार बंद है, मोहनदास नैमिशराय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004, पृ.64
7. आज बाज़ार बंद है, मोहनदास नैमिशराय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004, पृ.64
8. देह-दर्शक के खिलाफ़ लामबन्दी का पैगाम, मनोज कुमार, जनकृति-ई-पत्रिका, दिसम्बर, 2015
9. आज बाज़ार बंद है, मोहनदास नैमिशराय, वाणी प्रकाशन , नई दिल्ली, 2004, पृ.34 10
10. आज बाज़ार बंद है, मोहनदास नैमिशराय, वाणी प्रकाशन , नई दिल्ली, 2004, पृ. 34
11. उत्तर आधुनिकतावाद और दलित साहित्य, कृष्णदत्त पालीवाल, वाणीं प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृ. 146